सी एम एफ आर आइ
CMFRI

ICAR

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सं. 150 जुलाई - सितंबर 2016 ISSN 0972-2386

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

http://www.cmfri.org.in

भा कृ अनु प स्थापना दिवस के दौरान आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह

कृपया पृष्ठ 15 देखें

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पी.बी. सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ., कोचीन - 682 018, केरल, भारत

विषय सूची

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की समुद्री पिंजरा मछली पालन गतिविधियों के लिए राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मान्यता	3
अनुसंधान मुख्य अंश	8
प्रदर्शनियाँ	11
पुरस्कार	12
प्रशिक्षण कार्यक्रम	13
विशिष्ट व्यक्तियों का मुआइना	14
मनोरंजन क्लब	14
राजभाषा कार्यान्वयन	15
कृषि विज्ञान केन्द (एरणाकुलम) समाचार	16
कार्यक्रम में सहभागिता	17
मानव संसाधन विकास	18
कार्मिक समाचार	19

प्रकाशक

डॉ. ए. गोपालकृष्णन
निदेशक
भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
पोस्ट बोक्स सं. 1603, एरणाकुलम नोर्त पी. ओ.
कोच्ची - 682 018, केरल, भारत
दूरभाषः 0484-2394867
फैक्सः 91-484-2394909
ई-मेलः director@cmfri.org.in
वेबसाइटः www.cmfri.org.in

संपादक

डॉ. यू. गंगा

संपादकीय मंडल

डॉ. रेखा जे. नायर
डॉ. आर. जयभास्करन
डॉ. काजल चक्रबर्ती
श्री डी. लिंग प्रभु
श्रीमती पी. गीता
श्री अरुण सुरेन्द्रन
श्री पी. आर. अभिलाष

हिन्दी संपादन

श्री नवीन कुमार यादव
श्रीमती ई.के. उमा

निदेशक कहते हैं

सभी को हार्दिक अभिवादन!

समुद्री पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकी प्रचलित करने में संस्थान के निरंतर एवं अग्रणी प्रयास अब सफल हो रहे हैं और कई मछुआरे हमारी तकनीकी सहायता से इस प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए आगे आए हैं। इन प्रयासों की मान्यता के रूप में गुजरात के एक आदिवासी मछुआरे को समुद्री पिंजरों में मछली पालन सफल रूप से करने के लिए भा कृ अनु प द्वारा प्रदत्त पंडिट दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय कृषि पुरस्कार प्राप्त हुआ। इससे संस्थान द्वारा विकसित अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकियों के लाभों को मछुआरों का आजीविका स्तर बढ़ाने और स्थायी तौर पर मछली उत्पादन में वृद्धि लाने के लिए हमें प्रेरणा। मिलेगी संस्थान ने हितधारकों की आवश्यकताओं को पहचाना है और प्रकाश से मछली पकड़ने और अंतर्राष्ट्रीय विपणन के लिए सी आइ टी ई एस के अधीन की आवश्यकताओं का पालन करने हेतु सुरा (शार्क) तथा रे मछलियों के लिए गैर हानिकारक उपाय अपनाने के लिए नीति निर्देशों का कार्यान्वयन किया है। हमारे संस्थान को राजभाषा कार्यान्वयन कार्यक्रमों के उत्कृष्ट निष्पादन के लिए लगातार सातवें वर्ष राजर्षि टंडन पुरस्कार प्राप्त हुआ, जो सराहनीय उपलब्धि है। अब हम वर्ष 2016 की अंतिम तिमाही तक पहुँच गए हैं और अगले वर्ष की तैयारी कर रहे हैं, इस अवसर पर गत अनुभवों के मार्गदर्शन से उपलब्धियों की बेहतर ऊँचाइयाँ हासिल की जा सके।

ए. गोपालकृष्णन
निदेशक

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के बारे में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन कोच्ची में स्थापित केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान समुद्री मात्स्यिकी और समुद्र कृषि में अनुसंधान और प्रशिक्षण के लिए समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान संस्थान है।

सी एम एफ आर आइ के तीन क्षेत्रीय केन्द्र जो कि मंडपम कैंप, विशाखपट्टणम और वेरावल तथा सात अनुसंधान केन्द्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती राज्यों को समुद्री मात्स्यिकी नीति का अनुपालन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की समुद्री पिंजरा मछली पालन गतिविधियों के प्रचार लिए राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मान्यता

श्री हसनभाई भा कृ अनु प का पंडिट दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय कृषि पुरस्कार प्राप्त करते हुये

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा विकसित खुला सागर मछली पालन पिंजरे के नमूने को संस्थान से जुड़े हुए मछुआरे के सहयोग से राष्ट्रीय मान्यता के रूप में, भा कृ अनु प का प्रतिष्ठित पंडित दीन दयाल उपाध्याय अंत्योदय कृषि पुरस्कार (आंचलिक पुरस्कार) प्राप्त हुआ। श्री हसनभाई मुसंगरा जुमाभाई, जो गुजरात के सिदी समुदाय का मछुआरा है, ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र के मार्गदर्शन में किए गए खुला सागर पिंजरा मछली पालन की सक्रिय गतिविधियों के लिए पुरस्कार प्राप्त किया। पुरस्कार में 50,000/- रुपए और प्रशंसा पत्र सम्मिलित थे। श्री हसनभाई गुजरात की मछुआरा सहकारी समिति नामक, भारत आद्मजुत मत्स्योद्योग मंडली - तलाला, का लीडर है। इस समिति ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा विकसित देशीय खुला सागर पिंजरा मछली पालन तरीके का सफलतापूर्वक उपयोग करके मछली उत्पादन बढ़ाए जाने हेतु अपने समुदाय के लोगों के बीच प्रचलित किया। सीमांत, लघु और भूमि रहित किसानों को खेती के किसी भी क्षेत्र में टिकाऊ तथा समेकित तरीकों को विकसित करने में किए जाने वाले योगदान के लिए हर वर्ष यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

संस्थान के आदिवासी उप योजना (ट्राइबल सब प्लान-टी एस पी) व्यय के अंतर्गत वैज्ञानिक सामुदायिक पालन प्रदर्शन, प्रशिक्षण और व्यावहारिक प्रशिक्षण दे रहे हैं। संस्थान द्वारा वर्ष 2011 से पालन ग्रुप को वित्तीय एवं तकनीकी सहायता दी जा रही है। यहाँ का समुद्री पिंजरा फार्म देश का सबसे बडा फार्म माना जाता है, इसमें गैलवनाइज्ड आयरन (जी आइ) के 6 मी. के व्यास वाले 22 पिंजरे हैं। मछुआरों को स्वयं इस मछली पालन फार्म का परिचालन करने का आत्मविश्वास प्राप्त हुआ है और उनको महाचिंगट और कोबिया मछली की चार फसलें प्राप्त हुई और इससे उनके जीवन स्तर तथा मछली उत्पादन में वृद्धि लायी जा सकी।

एशियन फिशरीस सोसाइटी का स्वर्ण पदक पुरस्कार

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ को एशियन फिशरीस सोसाइटी (ए एफ एस), जो एशिया-पेसिफिक क्षेत्र के मात्स्यिकी सेक्टर में समर्पित संगठन है, द्वारा प्रतिष्ठित स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। कोच्ची में नवंबर 2015 के दौरान पिंजरा मछली पालन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (सी ए ए 5) सफल रूप से आयोजित करने के लिए संस्थान द्वारा किए गए प्रयासों की मान्यता के रूप में यह पुरस्कार दिया गया।

अनुसंधान कार्यविधियों के अतिरिक्त भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा पिंजरा मछली पालन में प्रशिक्षण दिया जा रहा और सभी समुद्रवर्ती राज्यों के मछुआरों के बीच इस पालन रीति का प्रचार देने के लिए पिंजरा मछली पालन का प्रदर्शन आयोजित किया जा रहा। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के मार्गदर्शन से देश के विभिन्न भागों में 750 से अधिक पिंजरा मछली पालन के कार्य चल रहे हैं। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, जिन्होंने वर्ष 2013 में निदेशक का कार्यभार ग्रहण किया है, ने बैंकोक, थाईलैंड में आयोजित 11 वें एशियन फिशरीस

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ए एफ एस पुरस्कार प्राप्त करते हुए

एंड अक्वाकल्चर फोरम (ए एफ ए एफ) में प्रोफसर षौलिन ह्युआंग, ए एफ एस के अध्यक्ष से स्वर्ण पदक और प्रशंसा पत्र प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त डॉ. ए. गोपालकृष्णन को बैंकॉक में आयोजित ए एफ एस की 13वीं आम सभा बैठक में कार्यकारी परिषद के भारतीय प्रतिनिधि के रूप में चुना गया।

मात्स्यिकी संस्थानों की परामर्श बैठक

मात्स्यिकी विभाग, केरल सरकार द्वारा भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 7 जुलाई 2016 को मात्स्यिकी सेक्टर के अनुसंधान एवं शैक्षिक संस्थानों की परामर्श बैठक आयोजित की गयी।

श्रीमती जे. मेर्सिकुट्टि अम्मा, माननीय मात्स्यिकी मंत्री, केरल सरकार ने बैठक की अध्यक्षता की। अनुसंधान संस्थानों द्वारा विकसित की जाने वाली प्रौद्योगिकियों को मछुआरों तथा मछुआरा समुदायों के बीच प्रभावी ढंग से प्रचलित करने की आवश्यकता पर उन्होंने ज़ोर दिया। उन्होंने बताया कि लक्षित ग्रुप तक प्रौद्योगिकियों का प्रचार सुनिश्चित करने हेतु केरल राज्य में कार्यरत सभी मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थानों के प्रतिनिधियों की समिति का गठन किया जाएगा। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने केरल के मात्स्यिकी सेक्टर के विकास के लिए आवश्यक सभी सहायता प्रदान करने का वादा किया और किशोर मछलियों की पकड़ रोकने के पूर्वोपाय और मत्स्यन प्रयासों के विनियमन के कार्यान्वयन पर सुझाव दिया। भा कृ अनु प-सी आइ एफ टी, भा कृ अनु प-सी आइ एफ आर आइ, भा कृ अनु प-एन बी एफ जी आर, भा कृ अनु प-कृषि विज्ञान केन्द्र, एम पी ई डी ए, सी आइ एफ एन ई टी, एन आइ पी एच ए टी के निदेशकों और प्रतिनिधियों, डॉ. ए. रामचन्द्रन, कुलपति, के यु एफ ओ एस तथा मात्स्यिकी विभाग के कार्मिकों ने बैठक में भाग लिया।

सी आइ टी ई एस की सूची में सम्मिलित शार्क और मान्टा रे मछली प्रजातियों के लिए एन डी एफ पर हितधारकों की परामर्श बैठक

बैंकॉक (थाईलैंड), सी आइ टी ई एस Cop 16, 2013 में सुरा मछलियों की पांच प्रजातियों (ओशियानिक व्हाइटटिप शार्क, प्रोबीगिल शार्क, स्कालप्ड, स्मूथ और ग्रेट हैमरहैड शार्क) और सभी मान्टा रे मछलियों को सी आइ टी ई एस (खतरे में पड़ी वन्य वनस्पति और जीव जातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सम्मेलन) के अनुबंध II में जोड़ा गया है। इनमें प्रोबीगिल शार्क को छोडकर बाकि सभी प्रजातियाँ भारतीय समुद्रों में पायी जाती हैं। अनुबंध II में जोड़ने की प्रभावी तारीख 14 सितंबर, 2014 थी। अनुबंध II में न केवल विलुप्त होने के खतरे में पड़ी प्रजातियाँ, बल्कि अतिजीवितता के साथ असंगत उपयोगिता रोकने हेतु जिन प्रजातियों का विपणन नियंत्रित किया जाना है, उनको सम्मिलित किया गया है। निर्यात या पुनःनिर्यात परमिट प्रमाण पत्र मंजूर करने पर ही अनुबंध II में जोड़ी गयी प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय विपणन की अनुमति दी जाएगी। इस संदर्भ में, अनुबंध II में सूचीकृत प्रजातियों के विपणन के लिए सी आइ टी ई एस आवश्यकताओं के भाग के रूप में गैर हानिकारक निष्कर्ष (एन डी एफ) दस्तावेज आवश्यक है। इसके लिए किसी वैज्ञानिक प्राधिकरण द्वारा संबंधित प्रजाति के जीव संख्या स्तर, वितरण, जीव संख्या प्रवणता, संग्रहण, विपणन सूचना, अन्य जीववैज्ञानिक तथा पारिस्थितिक कारकों पर विचार किया जाना है और यह परामर्श भी दिया जाना है कि इस तरह का निर्यात प्रजाति की अतिजीवितता पर हानिकारक नहीं हो जाए। साथ ही, वैज्ञानिक प्राधिकरण द्वारा उसी देश द्वारा जारी किए गए दोनों निर्यात परमिटों तथा ऐसी प्रजाजियों के वास्तविक निर्यात की निगरानी की जानी चाहिए। जब भी वैज्ञानिक प्राधिकरण यह निर्धारित करता है कि किसी भी प्रजाति की उपस्थिति परिस्थितिकी तंत्र में सुसंगत होनी चाहिए और इस प्रजाति को अनुबंध I में जोड़े जाने तक इस की उपस्थिति का स्तर आवश्यक हो, तब ऐसी प्रजातियों के नमूनों के निर्यात पर नियंत्रण लाने हेतु उचित प्रबंध प्राधिकरण को आवश्यक उपाय लेने का सलाह दिया जाना चाहिए।

कृषि मंत्रालय द्वारा भारत के लिए वैज्ञानिक प्राधिकरण के रूप में चुने गए भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ को ऊपर व्यक्त की गयी प्रजातियों पर एन डी एफ अध्ययन करने को कहा गया। तदनुसार तलमज्जी मात्स्यिकी प्रभाग द्वारा अध्ययन कार्य पूरा किया और अध्ययन के नतीजे प्रस्तुत करने और इन पर हितधारकों की राय प्राप्त करने के उद्देश से विभिन्न समुद्रवर्ती राज्यों में हितधारकों की बैठक आयोजित की गयी।

तूत्तुकुडी में हितधारकों की बैठक का दृश्य

मुम्बई

चेन्नई

वेरावल

कोच्ची

तूत्तूर

विशाखपट्टणम में 24 अगस्त 2016 को हितधारकों की बैठक आयोजित की गयी। तूत्तुकुडी में 26 अगस्त 2016, मुम्बई, चेन्नई और मंडपम में 27 अगस्त 2016, वेरावल में 29 अगस्त 2016, मंगलूरु में 01 सितंबर 2016, कोच्ची में 08 सितंबर 2016 और तूत्तूर में 01 अक्तूबर 2016 को बैठकें आयोजित की गयीं। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा आयोजित बैठकों में मछुआरों, मछुआरा संघों के नेताओं, विपणनकारों और शार्क मात्स्यिकी से जुड़े हुए निर्यातकों, गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों तथा राज्य मात्स्यिकी विभाग, वन्य जीव विभाग, एम पी ई डी ए और अन्य सरकारी एजेन्सियों के कार्मिकों ने भाग लिया।

हितधारकों को एन डी एफ और इसके कर्तव्यों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया गया। शार्क प्रजातियों के लिए प्रबंधन में सुधार की शर्तों के साथ एन डी एफ अध्ययन सकारात्मक रूप से देखा गया। मान्टा रे मछलियों के लिए मात्स्यिकी और विपणन की निगरानी और विनियम पर अधिदेशात्मक शर्तों के साथ सकारात्मक एन डी एफ पाया गया और प्रबंध कार्यों में सुधार लाने के सुझाव भी दिए गए। इस दौरान मछुआरों, विपणनकारों / निर्यातकों ने इन प्रजातियों के मत्स्यन और विपणन पर अपने अनुभवों का विवरण दिया। मछुआरे एकमत से सहमत हुए कि भारत में ये प्रजातियाँ लक्षित मात्स्यिकी में सम्मिलित नहीं हैं, बल्कि उप पकड़ के रूप में प्राप्त की जाती हैं। सभी केन्द्रों में हितधारकों ने एन डी एफ में जोड़ी गए सिफारिशों पर अपनी सहमति प्रकट की और इस संपदा के प्रग्रहण एवं विपणन की सूचना पर साझा करने की सहमति दी। उन्होंने पांच वर्षों के बाद दस्तावेजों की पुनरीक्षण की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। प्रमुख कार्य योजना यह थी कि शोधकर्ताओं तथा प्रबंध प्राधिकरण सहित सभी हितधारकों के बीच आंकडों की साझा करने और उपलब्ध आंकडों की कमियों की पूर्ति करके बेहतर प्रजाति विशिष्ट प्रबंधन उपाय लाना आवश्यक है। इन संपदाओं की स्थिति और जीवविज्ञानीय कमजोरियों पर अच्छी तरह की जानकारी उपलब्ध कराने के संबंध में सभी हितधारकों ने ज़ोर दिया।

(तलमज्जी मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

एम एस विश्वविद्यालय के साथ भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ का समझौता

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने, जो मन्नार खाड़ी की समुद्री जैवविविधता पर ज़ोर देते हुए अनुसंधान गतिविधियों को बढ़ावा दे रही है, सहयोगात्मक अनुसंधान कार्यक्रमों तथा इस क्षेत्र में समुद्री जैवविविधता के अनुसंधान में मानव शक्ति विकसित करने के उद्देश्य से मनोन्मणियन सुन्दरनार विश्वविद्यालय, तिरुनेलवेली के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ और डॉ. के. भास्कर, कुलपति, एम एस यु ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। इन सहयोगात्मक अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र द्वारा महत्वपूर्ण

भूमिका निभायी जाएगी। इस समझौता ज्ञापन से भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ विश्वविद्यालय का स्वीकृत अनुसंधान केन्द्र बन जाएगा और दोनों संस्थाओं द्वारा संयुक्त रूप से समुद्र विज्ञान के विकास के लिए सहकारी अनुसंधान परियोजनाओं, संगोष्ठियों, सम्मेलनों आदि का आयोजन किया जाएगा।

समुद्री मात्स्यिकी जनगणना 2016: आंकड़ा प्रविष्टि कार्य

लगभग 3,000 गणनाकारों द्वारा 73 जिलों में फैले गए 4,250 समुद्री मत्स्यन गाँवों में एकत्रित 11 लाख मछुआरा कुटुम्बों पर फरवरी 2016 में एकत्रित किए गए आंकड़ों की प्रविष्टि की जा रही है। करीब 100 कर्मचारी आंकड़ों की प्रविष्टि के कार्य में लगे हुए हैं और अधीक्षकों और वैज्ञानिकों द्वारा इसका प्रति परीक्षण किया जा रहा है। 9 समुद्रवर्ती राज्यों और 2 संघ राज्य क्षेत्रों की जनगणना रिपोर्ट तैयार करने में इन आंकड़ों का उपयोग किया जाएगा।

(टी.वी. सत्यानन्दन, अध्यक्ष, एफ आर ए डी की रिपोर्ट)

स्वचालित मौसम स्टेशन की खरीद

मौसम का पूर्वानुमान करने के लिए एन आइ सी आर ए परियोजना द्वारा मौसम विज्ञान संबंधी ग्रेड का स्वचालित मौसम स्टेशन (ए डब्लियु एस) खरीदकर स्थापित किया गया। दीर्घकालीन मौसम पूर्वानुमान के उद्देश्य से अनुकूलन किए गए इस उपकरण में डाटा लॉगेर्स, वायु का तापमान (ए टी) एवं सापेक्षित नमी (आर एच) सेन्सेर्स, टिप्पिंग बकट रैन गैज, तापमान आर्द्रता डाटा लॉगेर्स, हवा की गति और दिशा के सेन्सेर्स, 10_W सौर पैनल तथा केबल, बैटरी और माउन्टिंग हार्डवेयर के उपकरण सम्मिलित हैं। ए डब्लियु एस अब कार्यात्मक है और सभी मानकों के लिए आवधिक रूप से आंकड़ा ग्रहण और रिकोर्ड किए जा रहे हैं। आंकड़े सीधा कंप्यूटर में डाउनलोड करने के सोफ्टवेयर की योजना बनायी जा रही है ताकि आंकड़ा संग्रहण और भी आसान बन सकेगा। यह स्वचालित मौसम स्टेशन लगातार मौसम का पूर्वानुमान करने और इससे संग्रहित मौसम संबंधी आंकड़ों का उपयोग करके वैज्ञानिक सलाह देने में संस्थान की महत्वपूर्ण संपत्ति बन जाएगा।

समुद्र में पालन की गयी कोबिया मछली का अच्छा फसल संग्रहण

असोसिएशन ऑफ कोवलम प्रोग्रेसीव फिशरमेन (ए के पी एफ) के युवा सदस्यों की चार टीमों द्वारा भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के कोवलम क्षेत्र प्रयोगशाला, चेन्नई की समुद्री संवर्धन टीम के मार्गदर्शन से पिंजरा मछली पालन किया गया। कोवलम के समुद्र में कोबिया मछली का पालन करने के लिए अप्रैल 2016 में जी आइ पाइप से बनाए गए 6 मी. के व्यास वाले चार पिंजरे स्थापित किए गए। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के तकनीकी मार्गदर्शन से तमिल नाडु राज्य मात्स्यिकी विभाग, एफ आइ एम एस यु एल II और ए के पी एफ की इस संयुक्त पहल का आयोजन किया गया। पिंजरों में कोबिया मछली के 725, 650, 650 और 240 अंगुलिमीनों को संभरित किया गया और क्रमशः 173, 156, 150 और 150 पालन दिवस (डी ओ सी) पूरा करने के बाद 30 सितंबर, 2016 और 01 अक्तूबर, 2016 को फसल संग्रहण किया गया। प्रारंभिक संभरण के समय मछलियों का आकार 14-17 से.मी. की कुल लंबाई और 18-23 ग्राम भार था और मछलियों की अतिजीवितता 68-88% देखी गयी। कम संभरण सघनता के पिंजरे से सबसे अधिक मछली उत्पादन प्राप्त हुआ। उत्पादन की 75% मछलियों का भार > 2 कि.ग्रा. था और संग्रहित मछलियों को कन्याकुमारी के निर्यातक ने > 2 कि.ग्रा. भार वाली मछलियों को 300 रु. प्रति किलो ग्राम और 1-2 कि.ग्रा. के आकार की मछलियों को 180 रु. प्रति किलो ग्राम की दर पर खरीदा।

(जो किषक्कूडन, मद्रास अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

कोवलम में कोबिया मछली फसल संग्रहण का दृश्य

सिप्पिकुलम में आइ एम टी ए परीक्षणों का प्रारंभ

जलवायु लचीला कृषि पर नवोन्मेष (एन आइ सी आर ए) परियोजना के अंदर सिप्पिकुलम और तूत्तुकुडी के एकीकृत बहुपौष्टिक जलजीव पालन (आइ एम टी ए) के नमूना फार्मों के प्रदर्शनार्थ स्थान का चयन किया गया। इसके लिए राजीव गांधी जलजीव पालन केन्द्र से 2 टन के एफ आर पी टैंकों में प्रति टैंक में 500 की दर पर समुद्री बास (*लैटस कैलकारिफर*) मछली की संततियों को खरीदा गया। इनका दो महीनों का नर्सरी पालन किए जाने के बाद आइ एम टी ए परीक्षणों के लिए जी आइ पिंजरा जालों में पालन किया जाएगा।

(सी. कालिदास, एल. रंजित, पी.पी. मनोजकुमार, आइ. जगदीश और एम. कविता, टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

मंडपम के समुद्री पिंजरों में पालन की गयी कोबिया मछली का सफलतापूर्वक फसल संग्रहण

तमिल नाडु के रामनाथपुरम जिला प्रशासन ने समुद्री पिंजरों में कोबिया मछली का पालन करने के लिए 10 मछुआरा स्वयं सहायता संघों (एस एच जी) को मदद दी। इन में एक हिताधिकारी ग्रुप ने रामनाथपुरम जिले के तंगच्चिमडम में फरवरी 2016 के दौरान समुद्री पिंजरे में कोबिया मछली का पालन शुरू किया। दो जी आइ पिंजरों में हैचरी में उत्पादित कोबिया मछली के अंगुलिमीनों का संभरण किया गया। अप्रैल-मई, 2016 के दौरान विब्रियोसिस की वजह से मछलियों की भारी मर्त्यता हुई, लेकिन वैज्ञानिकों ने आवश्यक प्रबंधन उपाय सुझाया और इसके कारण रोग फैलने से रोका जा सका। इसके फलस्वरूप संभरण की गयी कोबिया मछलियों में से 22% की अतिजीवितता पायी गयी। पालन अवधि के 6 महीनों के बाद 27 अगस्त 2016 को 746 कि.ग्रा. कोबिया मछलियों का संभरण किया गया। मछलियों का औसत आकार 2.5 कि.ग्रा. था और प्रति किलो ग्राम के लिए 350 रुपए की दर पर मछलियों को बेचा गया, जिससे 2,61,100 रुपए का राजस्व एकत्रित किया गया। मछली पालन के लिए कुल परिचालन व्यय 1,76,000 रु. था और इससे 85100 रुपए का आय प्राप्त हुआ। लागत : लाभ का अनुपात 0.67 आकलित किया गया, जिससे रोग ग्रसन की वजह से नष्ट होने पर भी 33% के लाभ का संकेत मिला।

पिंजरे में पालन की गयी कोबिया मछलियों के संग्रहण का दृश्य

लोहे के छोटे ढांचे युक्त जाल-पिंजरों में महाचिंगट का पालन

सिप्पिकुलम के समुद्र में लोह ढांचे के चार जाल पिंजरों (2 मी x 1.5 मी x 1.5 मी) में लगभग 40 से 60 ग्राम भार वाले कम आकार के महाचिंगटों का संभरण किया गया। महाचिंगटों को कटलफिश और सीपी के टुकड़े खिलाये गये। फसल संग्रहण के वक्त 90% की अतिजीवितता के साथ 1.08 ग्राम की औसत दैनिक वृद्धि (ए डी जी) देखी गयी। ग्रेड I और ग्रेड II के कुल 89 कि.ग्रा. महाचिंगटों का फसल संग्रहण किया गया, जिनके मूल्य के रूप में क्रमशः 2250 रु. और 1700 रु. प्राप्त हुये। संस्थान द्वारा वैज्ञानिक पालन तरीकों का सुझाव दिए जाने के कारण 130 दिनों की पालन अवधि में 175000 रुपए का राजस्व संग्रहण किया जा सका।

(सी.कालिदास, एल.रंजित, पी.पी.मनोजकुमार, आइ.जगदीश और एम. कविता की रिपोर्ट)

महाचिंगट पालन के लिए अयेर्न ढांचे के जाल पिंजरे का दृश्य

कोच्ची में अप्रत्याशित ख़राब मौसम से समुद्री पिंजरों का विस्थापन

बेमौसम बारिश और समुद्र की ख़राब स्थिति की वजह से के एल सी ए, बीच यूनिट, फोर्ट कोच्ची की सहकारिता से भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ द्वारा फोर्ट कोच्ची के पास स्थापित समुद्री पिंजरों का नाश हुआ। समुद्र में नवंबर, 2015 में स्थापित पिंजरे में कोबिया मछली का संभरण किया गया और 5 जून को सैपंलिंग करने पर मछलियाँ 850 से 1300 ग्राम तक बढ़ गयीं। इसके बाद 16 जून को पिंजरे के स्थान में थोड़ा सा विस्थापन देखा गया और इसलिए 17 जून को मछलियों का संग्रहण करने और पिंजरे को सुरक्षित रूप से निकालने का निर्णय लिया गया। लेकिन बड़े सवेरे समुद्री भित्ति पर टकराकर पिंजरे का पूरी तरह विस्थापन हुआ और अधिकांश मछलियाँ बच गयीं और पिंजरे में बाकी पड़ी मछलियों की मृत्यु हुई थी। पिंजरे के साथ दो जाल, दो लंगर और जंजीर प्राप्त हुए। मछुआरों के लिए यह कड़ा अनुभव था, फिर भी वे उसी स्थान पर फिर से पिंजरा स्थापित करने और मछली पालन करने के लिए तैयार थे।

(इमेल्डा जोसफ, समुद्री संवर्धन प्रभाग की रिपोर्ट)

चेन्नई में ट्यूना ड्रिफ्ट गिल जाल मात्स्यिकी में केकड़ों का खतरा

चेन्नई के काशिमेडु अवतरण केन्द्र से महासागरीय ट्यूना मात्स्यिकी के लिए बहु दिवसीय ड्रिफ्ट गिल जाल का परिचालन किया जाता है। जुलाई और अगस्त महीनों के दौरान प्रति नाव 4 से 20 टन के साथ अच्छी मात्स्यिकी प्राप्त हुई। लेकिन सितंबर में प्रति नाव 1 से 2 टन के साथ पकड़ कम होने लगी। इस अवधि के दौरान पकड़ी गयी 99% ट्यूनाओं में अधिकांश स्किपजैक ट्यूना थी और बाकी येलोफिन ट्यूना थी। सितंबर में हुई कम मात्स्यिकी का एक प्रमुख कारण गहरे सागर वेलापवर्ती केकड़ों *चैरिबिडिस स्मिथी* के झुंड था, जो न केवल मछलियों का हमला करते है और जाल भी खराब करते हैं। मछलियों के उदरीय भाग में आक्रमण होने की वजह से आंतरिक भाग बाहर आते हैं। इस कारण से बाज़ार में मछलियों का कम मूल्य प्राप्त होता है। इस तरह 25% मछलियाँ आक्रमण से प्रभावित हो गयीं और जालों का भी गंभीर रूप से नुकसान होने से मछुआरों को वित्तीय संकट हुआ।

भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र द्वारा महाराष्ट्र सरकार के राज्य मात्स्यिकी विभाग के संयुक्त सहयोग से मुम्बई पुलिन में गणेश मूर्ति निमज्जन समारोह 2016 के दौरान भक्तों की सुरक्षा के पूर्वोपाय के रूप में जेली फिश और स्टिंग रे की उपस्थिति की निगरानी हेतु द्रुत मत्स्यन सर्वेक्षण आयोजित किया गया। इस संबंध में 4-13 सितंबर के दौरान गिरगाम चौपाटी, दादर चौपाटी, जुहु बीच और अक्सा बीच में कुल 11 मत्स्यन सर्वेक्षण आयोजित किए गए। डॉ. वी.वी. सिंह, श्री एम. अजय डी. नाखवा और डॉ. नीलेश ए. पवार ने इस कार्यक्रम का समन्वयन किया।

मड बैंक मात्स्यिकी में जेली फिश की बड़ी मात्रा में उप पकड़

चेट्टुवा मत्स्यन हार्बर में जेली फिश का दृश्य

मौसमिक मड बैंक मात्स्यिकी की निगरानी के दौरान चेट्टुवा मत्स्यन हार्बर में जेली फिश की व्यापक उप-पकड़ देखी गयी। जेली फिश की अधिकाधिक उप पकड़ मछुआरों के लिए अप्रिय समस्या बन गयी, क्योंकि पकड़ को तट पर लाने पर छंटाई करना मुश्किल होता है। स्थानीय बाज़ार में जेली फिश की मांग न होने की वजह से इन्हें छोड़ दिया गया।

(विवेकानन्द भारती, सिजो पोल, के.जी.बेबी, ग्रिनसन जोर्ज और टी.वी. सत्यानंदन की रिपोर्ट)

बलीन तिमी (व्हेल) का धंसन

धरेश्वर में धंसन हुए बलीन तिमी का दृश्य

कर्नाटक के उत्तर कन्नड तट पर जुलाई और अगस्त 2016 के दौरान तीन बलीन तिमियों का धंसन हुआ। रामनगांधी (धरेश्वर) में 1 अगस्त 2016 को, 27 अगस्त 2016 को होलनगड्डे और 13 अगस्त 2016 को होन्नावर तालुक के पाविनकुरवे तारिबागिलु में धंसन हुआ।

(नारायण जी वैद्या, कारवार अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

अनुसंधान मुख्य अंश

डी ए डी एफ द्वारा स्वीकृत प्रकाश मत्स्यन के विनियमन पर सी एम एफ आर आइ की सिफारिश

गोवा और कर्नाटक में कोष संपाश (पर्स सीन) मत्स्यन में प्रचलित प्रकाश उपयोग करते हुए मत्स्यन के संबंध में परंपरागत मछुआरों और प्रकाश के उपयोग से मत्स्यन किए जाने वाले एककों के बीच विवाद हुआ। परंपरागत मछुआरे यह दावा करते हैं कि इस तरह के मत्स्यन से बड़ी अंड युक्त मछलियों की अधिकाधिक पकड़ होने की वजह से मात्स्यिकी संपदाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। गोवा में गंभीर रूप से विवाद हुआ, इसलिए गोवा के प्रादेशिक समुद्र में प्रकाश के उपयोग से किए जाने वाले मत्स्यन पर रोक लगाकर आदेश जारी किया गया। रोक होने के बावजूद कोष संपाश के मछुआरों द्वारा किए गए निवेश व्यर्थ होने के कारण इस संबंध में विवाद अब भी जारी है। कर्नाटक में भी प्रकाश लगाए गए कोष संपाशों के प्रति आक्रोश हो रहा है। दक्षिण तट की समग्र समुद्री पकड़ में 17% और गोवा में 55% की कमी, जो तारलियों के घटने से हुई, तभी यह नया मत्स्यन तरीका शुरू किया गया। वास्तव में तारली मत्स्यन परंपरागत मछुआरों का मुख्य आश्रय है। इस अंतर-क्षेत्रीय संघर्ष पर विचार करते हुए पशुपालन, डेयरी और मात्स्यिकी विभाग (डी ए डी एफ) द्वारा 13 अगस्त 2016 को पश्चिम तट के राज्यों और मात्स्यिकी अनुसंधान संगठनों और हितधारकों की बैठक का आयोजन किया गया। इसके पश्चात् भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने पोलिसी नोट के रूप में 10 सिफारिश की, डी ए डी एफ द्वारा इनकी मंजूरी दी गयी और दिनांक 29 अगस्त 2016 के कार्यालय ज्ञापन (फा.सं. 21001/3/2014-एफ वाइ (इंड)) के अनुसार प्रकाश मत्स्यन के प्रभावकारी प्रबंधन पर भारत के सभी समुद्रवर्ती राज्यों को मार्गनिर्देश जारी किए गए। परामर्श के प्रमुख मुद्दे नीचे दिए गये हैं:

- केरल के कुछ जिलों में किए जाने वाले परंपरागत मत्स्यन परिचालन (डिप जाल/ ट्रामेल जाल) को छोड़कर प्रादेशिक समुद्रों (12 नॉटिकल मील तक) में प्रकाश मत्स्यन की अनुमति नहीं है।
- आनायों, फंदाओं, पोटों और लंबी डोर द्वारा प्रकाश मत्स्यन नहीं किया जाना चाहिए।
- ट्यूना को लक्षित करके एफ ए डी लगाने पर कृत्रिम प्रकाश का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।
- प्रादेशिक समुद्र के बाहर सिर्फ प्रकाश मात्स्यिकी की निम्नलिखित सीमाओं सहित प्राधिकृत मत्स्यन अनुमत्य है:
  कुल कोष संपाशों के 20-25% को प्रकाश मत्स्यन की अनुमति दी जाती है।
  कोष संपाशों की जालाक्षि का आकार > 45 मि.मी. और प्रकाश की शक्ति < 25 के डब्लियु होनी चाहिए।
- केवल ऊपरितल के प्रकाश की अनुमति है, जलांदर प्रकाश का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।
- मत्स्यन मौसम के दौरान कोष संपाशों द्वारा प्रकाश मत्स्यन महीने में 10 दिवस तक बंद किया जाना चाहिए।
- अप्रैल और मई महीनों में, जब बांगड़ा मछली का अंडजनन काल होता है, प्रकाश के उपयोग से कोष संपाश मत्स्यन नहीं किया जाना चाहिए।
- संबंधित समुद्रवर्ती राज्यों के मात्स्यिकी विभागों के प्रवर्तन विंग द्वारा प्रकाश मत्स्यन की कड़ी निगरानी की जानी चाहिए।
- मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थानों द्वारा प्रकाश मत्स्यन के प्रभावों और पकड़ के हिस्सों पर उचित अनुसंधान फीडबैक दिया जाना चाहिए।

इस संबंध में और अधिक विवरण भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ का प्रकाशन "*प्रकाश के उपयोग से मत्स्यन: इस नए विकास को भारत कैसे संभालेगा*, संस्थान द्वारा तैयार की गयी पोलिसी नोट पर आधारित समुद्री मात्स्यिकी नीति सारांश-4 (2016) में उपलब्ध है।

(के.एस.मोहम्मद, अध्यक्ष, मोलस्क मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

समुद्री अलंकारी कैमल चिंगट के अंडशावक विकास और डिंभक पालन में सफलता

कैमल चिंगट का ब्रूडस्टाक

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में *रिंकोसिनेटस डरबानेन्सिस*, जिसे सामान्य रूप से कैमल चिंगट या हिंज-बीक चिंगट कहा जाता है, का अंडशावक (ब्रूडस्टॉक) विकास और डिंभक (लार्वा) का पालन सफल रूप से किया गया। यह चिंगट, जो रिंकोसीनिटिडे कुटुम्ब के अंदर पाया जाता है, लगभग 4-5 से.मी. की लंबाई तक बढ़ता है। इस चिंगट के पारदर्शी शरीर पर लाल और सफेद रेखाएं होती हैं और कारापेस के ऊपरी भाग में Y आकार वाला सफेद चिह्न तथा सफेद ओसेल्ली (चित्तियाँ) भी देखी जाती हैं। अंड युक्त मादा चिंगटों में लगभग 200 से 500 अंड पाए जाते हैं। अंडों का स्फुटन होकर डंठल (स्टाक) रहित आंखों युक्त ज़ोइया डिंभक बाहर आते हैं। स्फुटन के 40 वें दिवस ये प्लियोपोड़ बड (अंकुर) के साथ ज़ोइयल स्तर तक पहुँचते हैं। 60 वें दिवस तक किशोर के रूप में इनका निर्मोचन होता है और साथ-साथ प्रौढ़ों के रंग और विशेषताएं प्राप्त होती हैं। पालन अवधि के दौरान, किशोर अवस्था प्राप्त होने से पहले कई बार निर्मोचन होता है। अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में इस अलंकारी चिंगट का मूल्य $ 10 और स्थानीय बाज़ार में प्रति चिंगट के लिए 500-700 रुपए है। ए आइ एन पी समुद्री संवर्धन परियोजना के अंदर यह अनुसंधान कार्य आयोजित किया गया।

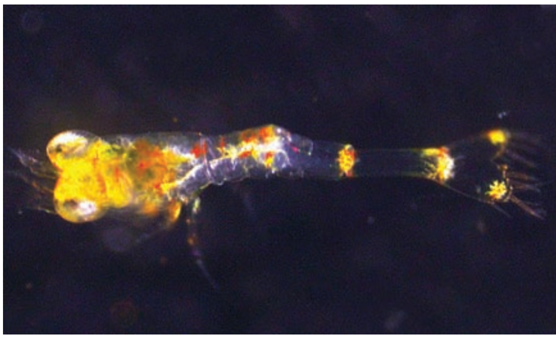

पहली ज़ोइया

40 दिवस का ज़ोइया

किशोर कैमल चिंगट (60 दिवस)

(अनिल एम.के. विषिंजम अनुसंधान केन्द्र की रिपोर्ट)

नॉटिलस प्रजाति का सी आइ टी ई एस में सूचीकरण

नॉटिलस प्रजाति को खतरे में पड़ी वन्य वनस्पति और जीव जातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सम्मेलन (सी आइ टी ई एस) के अंदर 'संरक्षित' सूची में जोड़ा गया है और इससे यह सुनिश्चित हो जाएगा कि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार द्वारा इस प्रजाति के जीवन पर खतरा नहीं है। मोलस्कन मात्स्यिकी प्रभाग ने चैम्बेर्ड नॉटिलूसस *नॉटिलस* प्रजाति के जीवविज्ञान और जीवन चक्र पर उपलब्ध सूचना पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को दी है और भारत, युनाइटेड स्टेट्स, फिजी और पलाउ द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत किए गए प्रस्ताव के आधार पर उनको सी आइ टी ई एस की अनुसूची II में जोड़ा गया है।

कीलटैल पाम्फ्रेट की असाधारण उपस्थिति

केरल के कोचीन मात्स्यिकी पोताश्रय से 22 सितंबर, 2016 को ब्रामिडे कुटुम्ब के टरीरक्टस रूबेसेन्स के एकल नमूने, जिसकी लंबाई 90 से.मी. और भार 9.31 कि.ग्रा. है, का संग्रहण किया गया। बेपुर के समुद्र से कांटा डोर द्वारा मछली को पकड़ा गया। मछली का नमूना प्रौढ़ नर था।

(वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

सबसे बड़े आकार का अरेबियन बैराकुडा

कोचीन मात्स्यिकी पोताश्रय में 1 अक्तूबर 2016 को सबसे बडे आकार के *स्फिरीना अरेबिएन्सिस*, जिसकी लंबाई 150.8 से.मी. और भार 21.3 कि.ग्रा. था, का अवतरण किया गया। लक्षद्वीप में परिचालित बहुदिवसीय कांटा डोर एकक द्वारा इस मछली को पकड़ा गया। यह पूर्णतः परिपक्व मादा मछली थी। इसके अंड बाहर आ रहे थे और गोनाड करीब 5 कि.ग्रा. के भार से युक्त था।

(वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

दुर्लभ तोता मछली (पेरेट फिश) की उपस्थिति

तोता मछली सारिडे कुटुम्ब के अंदर आती है, इस कुटुम्ब में कुल 10 वंश (जेनीरा) होते हैं। इनमें वंश *क्लोरूरस* दुर्लभ है और मन्नार खाड़ी से केवल पांच प्रजातियों की रिपोर्ट की गयी है। पाम्बन अवतरण केन्द्र से 7 सितंबर, 2016 को *क्लोरूरस* राकोरा प्रजाति का एक नमूना पाया गया और इस नमूने को संस्थान के संग्रहालय में संरक्षित रखा गया है।

(वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

तोता मछली क्लोरूरस राकोरा

गहरा सागर स्क्विडों पर अध्ययन

लक्षद्वीप के चारों ओर के दक्षिणपूर्व अरब सागर से एफ वी *सिल्वर पोम्पानो* द्वारा 11-16 जनवरी 2016 के दौरान संग्रहित गहरा सागर स्क्विड के नमूनों का विश्लेषण करने पर पाया गया कि *हिस्टियोट्यूथिस मिरान्डा*, *टीनोप्टेरिक्स सिकुला* और *ओक्टोपोट्यूथिस रुगोसा* प्रजातियों के अंदर आने वाले ये स्क्विड इस क्षेत्र से पहली बार पाए गए हैं और इन्हें पंजीकृत संख्या के साथ सी एम एफ आर आइ, कोच्ची के डेसिग्नेटड नेशनल रिपोसिटरी (डी आर ए) में जमा किया गया है। इन स्क्विडों की आयु और वृद्धि की जांच स्टाटोलिथ सूक्ष्मसंरचना (माइक्रोस्ट्रक्चर) द्वारा की जा रही है।

(मोलस्क मात्स्यिकी प्रभाग की रिपोर्ट)

हिस्टियोट्यूथिस मिरान्डा
ACCN: DF 1.2.2.5

टीनोप्टेरिक्स सिकुला
ACCN: DG 2.6.2.6

ओक्टोपोट्यूथिस रुगोसा
ACCN: DF 2.5.2.5

पाक उपसागर में कटलफिश और स्क्विड का समुद्र रैंचन

धनुषकोटी के मछुआरे कैशुरीना पेड़ की टहनियों को बंडल करके धनुषकोटी और अरिचालमुनै के चारों ओर पाक उपसागर में मछली संचयन उपाय (एफ ए डी) के रूप में उपयोग करते हैं। इन एफ ए डी पर आकर्षित होकर अंडयुक्त कटलफिश और स्क्विड एकत्रित होती हैं और इनको मछुआरे लक्षित करते हैं। संस्थान द्वारा पहले ही अध्ययन करके यह संकेत दिया गया था कि एफ ए डी के उपयोग से "रिक्रूटमेन्ट ओवरफिशिंग" द्वारा कटलफिश के स्टॉक पर विनाशकारी प्रभाव होता है। समुद्र रैंचन करने के उद्देश्य से हाल ही में 4 जुलाई 2016 को मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा पाक उपसागर के मुनैक्काडु तट पर धंसन हुए अंड समूहों का स्फुटन करवाने की पहल शुरू की गयी।

(मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र की रिपोर्ट)

मछलियों के समुद्र रैंचन का दृश्य

विशेष कार्यग्रहण

डॉ. आर. नारायणकुमार, अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी को राजीव गांधी जलजीव पालन केन्द्र, सीरकाषी, तमिल नाडु की अनुसंधान परियोजनाओं (2012-16) की मूल्यांकन समिति के सदस्य के रूप में नामित किया गया।

डॉ. पी. कलाधरन, प्रधान वैज्ञानिक को मात्स्यिकी एवं महासागर अध्ययन का केरल विश्वविद्यालय (के यु एफ ओ एस) के कुलपति द्वारा फिशरी एनवयोर्नमेन्ट के शासी परिषद के विशेषज्ञ के रूप में नामित किया गया।

“मूल्यांकन एवं प्रभाव निर्धारण” पर कार्यप्रणाली कार्यशाला

एस ई ई टी टी प्रभाग द्वारा भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में 1-3 सितंबर, 2016 के दौरान मूल्यांकन एवं प्रभाव निर्धारण अध्ययन पर कार्यप्रणाली कार्यशाला आयोजित की गयी। इस दौरान प्रभाग के वैज्ञानिकों ने अनुसंधान क्षेत्र के विकास का विवरण दिया, इसके साथ साथ प्रभाग के सभी वैज्ञानिकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया, जो अपने अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए उपयोगी साबित होगा। इस दौरान विभिन्न परियोजना गतिविधियों पर पुनरीक्षण किया गया और आगे की जाने वाली परियोजना गतिविधियों के विषय की पहचान के लिए बुद्धिशीलता सत्र भी आयोजित किया गया।

(आर.नारायणकुमार, अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी की रिपोर्ट)

डॉ. इमेल्डा जोसफ, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग ने जैवप्रौद्योगिकी विभाग (डी बी टी), भारत सरकार और कैंब्रिज विश्वविद्यालय, युनाइटेड किंगडम द्वारा 4-10 सितंबर, 2016 के दौरान क्लेयर कॉलेज, कैंब्रिज विश्वविद्यालय, यू.के. में आयोजित फसल एवं कृषि विज्ञान में महिला नेतृत्व पर प्रथम न्यूटन-भाभा कार्यशाला में भाग लिया। विभिन्न भा कृ अनु प संगठनों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और डी बी टी से कुल 23 महिला प्रतिभागी कार्यशाला में उपस्थित थीं। hfp कनसल्टिंग (जर्मनी) द्वारा विज्ञान के क्षेत्र में महिला नेताओं पर कार्यशाला आयोजित की गयी। आत्वविश्वास बढ़ाने के साथ नेटवर्किंग और बातचीत की कुशलता बढ़ाने से वैज्ञानिक अनुसंधान में नेतृत्व की भूमिका सफल ढंग से निभाने में महिलाओं को मदद करना इस कार्यशाला का उद्देश्य था।

प्रदर्शनियाँ

सी एम एफ आर आइ ने सी पी सी आर आइ, कायमकुलम में 29 से 30 सितंबर, 2016 के दौरान आयोजित “भारत में नारियल सेक्टर की संभावनाएं” पर राष्ट्रीय बैठक के दौरान आयोजित कृषि मेला में भाग लिया। माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने 29 सितंबर, 2016 को बैठक का उद्घाटन किया।

सी एम एफ आर आइ ने सेन्ट पीटेर्स कॉलेज, कोलन्चेरी में 22 और 23 सितंबर, 2016 के दौरान आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में भाग लिया।

सी पी सी आर आइ में आयोजित कृषि मेला के दौरान भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ स्टॉल में आगंतुक

भा कृ अनु प-कारवार अनुसंधान केन्द्र ने कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय (यु ए एस), धारवाड़ में 24-27 सितंबर 2016 के दौरान आयोजित कृषि मेला में भाग लिया। श्री कृष्ण बैर गौडा, माननीय कृषि मंत्री, कर्नाटक ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शित वस्तुओं द्वारा संस्थान द्वारा विकसित पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकियों पर प्रकाश डाला गया।

कोलन्चेरी में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी

यु ए एस में आयोजित कृषि मेला

भा कृ अनु प दक्षिण क्षेत्र खेलकूद में ऑवरआल चैंपियन

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (एन ए ए आर एम), हैदराबाद में आयोजित भा कृ अनु प अंतर-संस्थानीय दक्षिण क्षेत्र खेलकूद में भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की टीम समग्र विजेता बन गयी। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ टीम 77 अंक प्राप्त करके लगातार दूसरे वर्ष चैंपियन बनी। केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रा प्रदेश और तेलंगाना में मुख्यालय होने वाले भा कृ अनु प के 25 संस्थानों ने 5 दिनों के मेले में भाग लिया। भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ टीम के सदस्यों को फुटबॉल, वॉलीबॉल, बैडमिन्टन डबिल्स, 4x100 दौड़ और ऊंची कूद के लिए पुरस्कार प्राप्त किये। संस्थान में टीम का सम्मान किया गया।

(ग्रिनसन जोर्ज, सी एम एफ आर आइ खेलकूद टीम की रिपोर्ट)

खेलकूद टीम ट्रॉफी के साथ

डॉ. ग्रिनसन जोर्ज को भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, मुम्बई में 11 अगस्त 2016 को आयोजित कार्यक्रम में डॉ. हीरालाल चौधरी उत्कृष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार और डॉ. सी.वी. कुल्कर्णी उत्कृष्ट युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्त हुए और उन्होंने पुरस्कार के उपलक्ष्य में भाषण भी दिया।

"डॉ. सी.वी. कुल्कर्णी उत्कृष्ट युवा वैज्ञानिक पुरस्कार" प्राप्त करते हुये

डॉ. ग्रिनसन डॉ. हीरालाल चौधरी उत्कृष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्त करते हुये

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनुसंधान केन्द्र को हैदराबाद में 4 अगस्त, 2016 को आयोजित भारत क्षेत्र के लिए ई एस आर आइ क्षेत्रीय यूज़र सम्मेलन में होशियार दुनिया के लिए जी आइ एस प्रौद्योगिकी के सबसे नवीन प्रयोग के लिए उत्कृष्ट लेख पुरस्कार प्राप्त हुआ। सुश्री एस. शैलजा और श्री शुभांकर (अनुसंधान अध्येता) द्वारा जी आइ एस और भारत में समुद्री मात्स्यिकी परिरक्षण और प्रबंधन में इसका प्रयोग विषयक लेख का पुरस्कार प्राप्त किया गया।

डॉ. बी. जोनसन, वैज्ञानिक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र को शैवाल जैवप्रौद्योगिकी में आधुनिक विकास विषय पर 10-12 अगस्त 2016 के दौरान स्कूल ऑफ बायोसइन्स एंड तकनोलोजी, वी आइ टी विश्वविद्यालय एवं समुद्री शैवाल अनुसंधान एवं उपयोगिता संघ में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में युवा अन्वेषक पुरस्कार प्राप्त हुआ।

डॉ .बी. जोनसन को युवा अन्वेषक पुरस्कार प्रदान करते हुए

बैंकोक में आयोजित 11 वां ए एफ ए एफ के जाति विभाग और मात्स्यिकी विषयक सत्र में डॉ. इमेल्डा जोसफ द्वारा भारत के केरल में जलजीव पालन के विकास में समान अवसर के लिए पिंजरा मछली पालन विषय पर प्रस्तुत लेख को अत्यधिक सराहनीय लेख पुरस्कार प्राप्त हुआ।

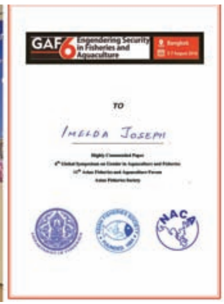

11 वें ए एफ ए एफ में डॉ. इमेल्डा जोसफ द्वारा लेख प्रस्तुतीकरण

डॉ. महेश्वरुडु, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, क्रस्टेशियन मात्स्यिकी प्रभाग को फ्रेन्डशिप फोरम द्वारा नई दिल्ली में 28 अगस्त, 2016 को आयोजित कार्यक्रम में भारत उत्कृष्टता पुरस्कार और स्वर्ण पदक प्रदान किए गए।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के पुरी क्षेत्र केन्द्र के मार्गदर्शन में पिछवाड़ा शाकवाटिका और छत के ऊपर समुद्री शैवाल के उपयोग से टमाटर का जैवपालन की जाने वाली दो महिला हिताधिकारियों को उड़ीषा के माननीय कृषि एवं किसान सशक्तीकरण मंत्री द्वारा पुरस्कार प्रदान किया। इन महिलाओं को 7वां श्रीखेत्र कृषि मेला-2016 के दौरान पुरस्कार प्रदान किया गया। *(डॉ.रीता जयशंकर, प्रभारी वैज्ञानिक, पुरी क्षेत्र केन्द्र की रिपोर्ट)*

मात्स्यिकी प्रबंधन की ओर आवास व्यवस्था अभिगम पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

निदेशक, सी एम एफ आर आइ के साथ बी ओ बी पी के प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षणार्थी

भा कृ अनु प-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और बी ओ बी पी-आइ जी ओ द्वारा सफल रूप से आवश्यक ई ए एफ एम: मात्स्यिकी प्रबंधन की ओर आवास व्यवस्था अभिगम में क्षमता विकास विषय पर 30 अगस्त 2016-3 सितंबर, 2016 के दौरान कोच्ची, केरल में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. ई.जी. सैलास, भूतपूर्व निदेशक, सी एम एफ आर आइ एवं भूतपूर्व कुलपति, केरल कृषि विश्वविद्यालय द्वारा प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन किया गया। डॉ. आर. नारायणकुमार, प्रधान वैज्ञानिक ने सभा का स्वागत किया और डॉ. युगराज यादवा, निदेशक, बी ओ बी पी-आइ जी ओ ने कार्यक्रम पर संक्षिप्त विवरण दिया। भारत के अतिरिक्त बांगलादेश, श्रीलंका और मालदीव आदि 4 देशों से कुल 24 व्यक्तियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण का समापन कार्यक्रम 3 सितंबर, 2016 को आयोजित किया गया और डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने प्रमाण पत्र प्रदान किए। चुने गए 6 प्रशिक्षणार्थियों को 5 से 6 सितंबर 2016 के दौरान ई ए एफ एम पर प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।

(बोबी इग्नेशियस, प्रभारी वैज्ञानिक, एच आर डी सेल की रिपोर्ट)

पुरी क्षेत्र केन्द्र में प्रशिक्षण कार्यक्रम

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के पुरी क्षेत्र केन्द्र ने ट्राइबल सब प्लान (टी एस पी) के अंदर 3 सितंबर, 2016 को समुद्री पख मछली पालन के लिए एच डी पी ई पिंजरा निर्माण और जलायन के संबंध में पुरी में प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का आयोजन किया। श्री पिनाकी मिश्रा, माननीय सांसद, श्री महेश्वरा मोहन्ती, अध्यक्ष, नवकलेबरा अवसंरचना पर्यवेक्षण समिति और श्री बिष्णुपाद सेथी, आइ ए एस, मात्स्यिकी आयुक्त एवं सचिव, उड़ीषा सरकार भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। अध्यक्षीय भाषण में श्री पिनाकी मिश्रा ने उड़ीषा के मछुआरों को आने वाली समस्याओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ.रीता जयशंकर, प्रभारी वैज्ञानिक, पुरी क्षेत्र केन्द्र ने यह बताया कि पिंजरा निर्माण में कुशलता विकास के प्रथम चरण के लिए कुल 22 आदिवासी लोगों को चुना गया है और उसी ग्रुप को पिंजरे में समुद्री पख मछली पालन के द्वितीय और तृतीय चरण में प्रशिक्षित किया जाएगा ताकि वे इसका पूरी तरह लाभ उठा सकें।

पुरी में प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन

समुद्री पिंजरा मछली पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ क्षेत्रीय केन्द्र मंडपम में तमिल नाडु राज्य मात्स्यिकी विभाग की एफ आइ एम एस यु एल-।। परियोजना के अंदर मछुआरों और मात्स्यिकी क्षेत्र में कार्यरत कार्मिकों के लिए 20-22 सितंबर, 2016 के दौरान पिंजरों में समुद्री मछली पालन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में महाराष्ट्र के बोदनी, मालवानी, पाथवाडी और एडवान गाँवों के 20 मछुआरों के लिए 18-25 जुलाई, 2016 को खुला सागर में पिंजरा मछली पालन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

महाराष्ट्र के 24 मछुआरों के लिए 21 जुलाई, 2016 से 23 जुलाई, 2016 के दौरान खुला सागर में पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकी प्रदर्शन विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें प्लवमान पिंजरे में मछली पालन किए जाने के विभिन्न पहलुओं पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

मछुआरिनों के लिए कुशलता विकास कार्यक्रम

सी एम एफ आर आइ कारवार अनुसंधान केन्द्र में तटीय विकास प्राधिकरण, मंगलूरु के सहयोग से 12 अगस्त 2016 को "खारा पानी पिंजरा मछली पालन और इससे जुड़ी हुई गतिविधियाँ" विषय पर एक दिवसीय कुशलता विकास कार्यक्रम आयोजित किया गया। उत्तर कन्नड़ जिले के विभिन्न गाँवों से कुल 63 मछुआरिनों ने कार्यक्रम में भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्थान चयन, पिंजरे की सजावट एवं लंगर और खारा पानी पिंजरा मछली पालन के संबंध में सत्र चलाए गए। प्रशिक्षण की समापन सभा में श्री निवेदित आल्वा, अध्यक्ष, तटीय विकास प्राधिकरण, मंगलूरु ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ में डेयर/भा कृ अनु प के वित्तीय सलाहकार द्वारा निरीक्षण

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 23 सितंबर, 2016 को आयोजित दक्षिण क्षेत्र में स्थित भा कृ अनु प संस्थानों के वित्तीय विषयों पर तीसरी परिचर्चात्मक बैठक में श्री सुनिल कुमार सिंह, अतिरिक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार (डेयर/भा कृ अनु प) ने अध्यक्षता की। श्री देवेन्द्र कुमार, निदेशक (वित्त), डॉ. ए.के. वसिष्ठ, सहायक महानिदेशक (कार्मिक), श्रीमती रश्मी आर. राव और श्री ओ.पी. नागर, उपनिदेशक गण (वित्त), श्री राजेश सहाय, वरिष्ठ वित्त एवं लेखा अधिकारी और श्री के.के. शर्मा, वित्त एवं लेखा अधिकारी, भा कृ अनु प मुख्यालय और इनके अतिरिक्त दक्षिण क्षेत्र में स्थित 22 भा कृ अनु प संस्थानों के वित्त एवं लेखा अधिकारियों ने भी बैठक में भाग लिया। सभा का संबोधन करने के बाद उन्होंने एन ए ए आर एम, हैदराबाद में 25 अप्रैल, 2016 को आयोजित परिचर्चात्मक बैठक की समीक्षा की। इस दौरान दक्षिण क्षेत्र में स्थित भा कृ अनु प के 22 संस्थानों के बकाया लेखा परीक्षा पैरा का निपटान, बैंक समाधान से संबंधित मामलों, बजत, निधि के उपयोग, पेंशन से संबंधित मामलों और आंतरिक वित्तीय मामलों की प्रगति पर चर्चा की गयी। बाद में श्री एस.के. सिंह ने भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ के वैज्ञानिकों का संबोधन किया। उन्होंने ज़ोर दिया कि कोडल औपचारिकताओं और वित्तीय कार्यविधियों के अनुसार समय पर और पारदर्शी तरीके से अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए आवंटित निधि का व्यय किया जाना चाहिए।

- डॉ.वी.वी.सुगुणन, भूतपूर्व ए डी जी (अंतःस्थलीय मात्स्यिकी), भा कृ अनु प एवं वरिष्ठ सलाहकार, राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एन एफ डी बी), हैदराबाद ने 10-12 सितंबर 2016 के दौरान मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र का निरीक्षण किया।

डॉ. वी.वी. सुगुणन हैचरी की सुविधाओं का निरीक्षण करते हुए

- डॉ. जे.के. जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी) ने 18 जुलाई, 2016 को मुम्बई अनुसंधान केन्द्र का निरीक्षण किया।

मनोरंजन क्लब

मुख्यालय और मांगलूर और विषिंजम अनुसंधान केन्द्रों में सभी कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता से ओणम मनाया गया।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ को राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ को वर्ष 2014-2015 के दौरान 'ग' क्षेत्र में स्थित संस्थानों में राजभाषा की गतिविधियों के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए 7 वीं बार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हुआ। विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 16 जुलाई, 2016 को आयोजित भा कृ अनु प स्थापना दिवस कार्यक्रम में डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक ने श्री परषोत्तम रूपाला, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री से पुरस्कार प्राप्त किया। श्री सुदर्शन भगत, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री और डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महा निदेशक, भा कृ अनु प भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

हिन्दी चेतना मास समारोह - 2016

मुख्यालय में कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 1-29 सितंबर, 2016 के दौरान हिन्दी चेतना मास-2016 मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे हिन्दी टिप्पण, आलेखन एवं शब्दावली, हिन्दी वर्ग पहेली, प्रश्नोत्तरी और समाचार वचन आयोजित की गयीं। चेतना मास का समापन कार्यक्रम 30 सितंबर को आयोजित किया गया, जिस में श्रीमती वर्षा गोडबोले, क्षेत्रीय प्रबंधक, नेशनल इंश्योनेन्स कंपनी, लि. कोच्ची मुख्य अतिथि रही और डॉ. आर. नारायणकुमार, अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी ने अध्यक्षीय भाषण दिया। इस दौरान श्री नवीन कुमार यादव, सहायक निदेशक (रा भा) ने माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह और माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह के संदेशों का वाचन किया। समुद्री जैवविविधता प्रभाग को राजभाषा रोलिंग ट्रोफी प्रदान की गयी। इस अवसर पर प्रतियोगिताओं और प्रोत्साहन योजना के पुरस्कार प्रदान किए गए। श्री सी. मुरलीधरन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने सभा का स्वागत किया और श्री नवीन कुमार यादव ने धन्यवाद प्रकट किया।

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में 14 से 20 सितंबर, 2016 के दौरान केन्द्र के कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ हिन्दी सप्ताह मनाया गया। डॉ. ए. सफ्राम्मा, सहायक प्रोफसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, अमेरिकन कॉलेज, मदुरै ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र, प्रभारी वैज्ञानिक ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

विषिंजम अनुसंधान केन्द्र में 14-28 सितंबर, 2016 के दौरान कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। श्री के.जी. वर्गीस, चीफ कमाडेंट, तटरक्षक स्टेशन, विषिंजम ने हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में 14 से 22 सितंबर 2016 के दौरान हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं और सभी कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से कार्यक्रमों में भाग लिया। कारवार अनुसंधान केन्द्र में 16 से 30 सितंबर, 2016 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। मद्रास अनुसंधान केन्द्र में 19-24 सितंबर 2016 के दौरान हिन्दी सप्ताह मनाया गया। डॉ. पी. लक्ष्मीलता, प्रभारी वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति अध्यक्ष ने समारोह का उद्घाटन किया और केन्द्र के सभी कर्मचारियों ने बडे उत्साह से प्रतियोगिताओं में भाग लिया। समापन कार्यक्रम में डॉ. आर. गोपालकृष्णन, सहायक प्रोफसर, हिन्दी विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय मुख्य अतिथि रहे और उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार/प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। डॉ. पी. हेमशंकरी, डॉ. आर. गीता और श्रीमती एस. अंजली देवी ने वर्ष 2015-2016 के दौरान सराहनीय कार्य करने के लिए विशेष पुरस्कार प्राप्त किए।

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में हिन्दी पखवाड़ा बैठक

मुख्यालय में समापन कार्यक्रम का दृश्य

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक की अध्यक्षत में 25 जुलाई, 2016 को आयोजित की गयी। बैठक में अप्रैल-जून, 2016 तिमाही के दौरान की राजभाषा कार्यविधियों की समीक्षा की गयी और आगे के सुधार के लिए आवश्यक निर्णय लिए गए।

हिन्दी कार्यशालाएं

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ मुख्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 4 जुलाई, 2016 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गयी। श्रीमती जयश्री, प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना, कोच्ची ने क्लास आयोजित की।

मद्रास अनुसंधान केन्द्र में श्रीमती पी.सारस्वर जेहान चिदा, सहायक निदेशक (रा भा), बी एस एन एल द्वारा वर्तनी और उच्चारण विषय पर हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें केन्द्र के कुल 42 कर्मचारियों ने भाग लिया। डॉ. पी. सरस्वती, सहायक प्रोफसर, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई द्वारा 30 सितंबर 2016 को दैनिक जीवन में हिन्दी का उपयोग विषय पर हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें केन्द्र के कुल 21 कर्मचारियों ने भाग लिया।

ऑनलाइन पोर्टल-कृषि विज्ञान केन्द्र ज्ञान नेटवर्क

कृषि विज्ञान केन्द्र एरणाकुलम ने संस्थान से संबंधित सभी सूचनाएं जनता के हितार्थ राष्ट्रीय के वी के पोर्टल-कृषि विज्ञान केन्द्र ज्ञान नेटवर्क में अपलॉड की है। http://kvk.icar.gov.in/ में लॉगइन करने पर इन सूचनाओं को एक्सेस किया जा सकता है। इस पोर्टल से देश के सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों से संबंधित प्रासंगिक सूचनाएं प्राप्त की जा सकती हैं।

मछुआरिनों के लिए कुशलता विकास कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र एरणाकुलम ने मछुआरिन सहायता समूह (एस ए एफ) के सहयोग से मछली उत्पादों के उत्पादन, पैकिंग और विपणन कौशल विकास पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 23 से 27 अगस्त, 2016 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण में चौबीस मछुआरिनों को कच्चे माल का चयन, उत्पादन, भंडारण, पैकिंग, लेबलिंग, ट्रेड मार्क का पंजीकरण, अधिदेशात्मक लाइसेन्स, अपशिष्ट की उपयोगिता, परीक्षणात्मक विपणन और प्रचार गतिविधियों पर प्रशिक्षण दिया गया। आपसी चर्चा में एस ए एफ के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

कौशल विकास कार्यक्रम में मछली में मूल्यवर्धन पर प्रशिक्षण देने का दृश्य

बागवानी मशीनीकरण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

कृषि विज्ञान केन्द्र एरणाकुलम और भा कृ अनु प-केन्द्रीय कृषि इंजिनीयरी संस्थान (सी आइ ए ई) का क्षेत्रीय केन्द्र, कोयम्बतूर ने संयुक्त रूप से सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में 29 जून, 2016 को महिला किसानों के लिए बागवानी मशीनीकरण पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। सी आइ ए ई के विशेषज्ञों ने प्रशिक्षणार्थियों से आपसी विचार विमर्श किया। डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ ने प्रमाण पत्र प्रदान किए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान पोटिंग मिश्रण तैयार करने के संबंध में प्रदर्शन

विपणन मेला

कृषि विज्ञान केन्द्र एरणाकुलम द्वारा सी एम एफ आर आइ मुख्यालय, कोच्ची में सब्जी बीज और छोटी मुर्गियों के लिए आयोजित चार विपणन मेलों से कुल 1400 किसान लाभान्वित हुए।

- **डॉ. ए. गोपालकृष्णन,** निदेशक ने डॉ. एस. अय्यप्पन, भूतपूर्व महानिदेशक, भा कृ अनु प, नई दिल्ली की अध्यक्षता में नई दिल्ली में 21 और 22 जुलाई 2016 को आयोजित समुद्री मात्स्यिकी पर राष्ट्रीय नीति का मसौदा तैयार करने के लिए आयोजित समिति की 6 वीं बैठक में भाग लिया।

  डॉ. दिलीप कुमार, भूतपूर्व निदेशक/कुलपति, भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई की अध्यक्षता में 29 जुलाई 2016 को आयोजित आइ जे ए एस पुनरीक्षण बैठक और कृषि बीमा के लिए प्रौद्योगिकी की उपयोगिता पर कार्यदल की सब-ग्रुप 5 (लाइव स्टॉक और जलजीव पालन) की प्रथम बैठक में भाग लिया।

  शासन सचिवालय, तिरुवनंतपुरम में 7 सितंबर 2016 को आयोजित राज्य मात्स्यिकी संपदा प्रबंधन समिति (एफ आइ आर एम ए) की XIX वीं शासी निकाय की बैठक में भाग लिया।

  एम पी ई डी ए, कोच्ची में 27 सितंबर, 2016 को आयोजित राजीव गांधी जलजीव पालन केन्द्र की 32 वीं सलाहकार समिति बैठक में भाग लिया।

  माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली के साथ सी पी सी आर आइ क्षेत्रीय स्टेशन, कायमकुलम में 29 सितंबर, 2016 को आयोजित कुलपतियों और कृषि संस्थानों के निदेशकों और वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. के.एस. मोहम्मद,** अध्यक्ष, एम एफ डी ने 21 जुलाई 2016 को भा कृ अनु प, नई दिल्ली में समुद्री मात्स्यिकी पर राष्ट्रीय नीति का मसौदा तैयार करने के लिए आयोजित समिति की 6 वीं बैठक में भाग लिया।

  केरल मात्स्यिकी विभाग के नव-नियुक्त कार्यपालक कर्मचारियों के लिए मात्स्यिकी प्रशिक्षण केन्द्र, आलुवा में 3 अगस्त, 2016 को "समुद्री मात्स्यिकी संपदा परिरक्षण एवं प्रबंधन" विषय पर व्याख्यान दिया।

  मत्स्यन यानों में एल ई डी लाइट (प्रकाश उत्सर्जक डायोड) के उपयोग और विनियमन से संबंधित मामलों पर चर्चा करने के लिए कृषि भवन, नई दिल्ली में 16 अगस्त, 2016 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

  एन ई टी एफ आइ एस एच द्वारा केरल की मात्स्यिकी में न्यूनतम नियामक आकार (एम एल एस) का प्रभावकारी कार्यान्वयन विषय पर 26 अगस्त, 2016 को कोच्ची में आयोजित बुद्धिशीलता कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. वी. कृपा,** अध्यक्ष, एफ ई एम डी डॉ. वी. कृपा, अध्यक्ष, एफ ई एम डी ने सदस्य सचिव के रूप में 8 जुलाई, 2016 को समुद्री तेल रिसाव के कार्य परिषद की प्रथम बैठक का आयोजन किया।

  के एम स्कूल ऑफ मराइन इंजिनीयरिंग, सी यु एस ए टी में 5 अगस्त, 2016 को आयोजित अंतर्राष्ट्रीय समुद्रतटवर्ती संगोष्ठी 2016 में भाग लिया।

  के यु एफ ओ एस की अकादमिक परिषद की 12 अगस्त, 2016 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

  आलप्पुषा में पुन्नप्रा मछुआरा विकास एवं सहकारिता समिति द्वारा 5 सितंबर, 2016 को आयोजित संगोष्ठी में भाग लिया और 'कूड़े का प्रभाव' पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

- **डॉ.आर.नारायणकुमार,** अध्यक्ष, एस ई ई टी टी डी ने कोच्ची में 7 जुलाई, 2016 को आयोजित केन्द्रीय अनुसंधान एवं शैक्षिक संस्थानों के साथ मात्स्यिकी परामर्श बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. जी. महेश्वरुडु,** अध्यक्ष, सी एफ डी ने 16 जुलाई, 2016 को समुद्री जीव संपदा विभाग, आंध्रा विश्वविद्यालय, विशाखपट्टणम में आयोजित बोर्ड ऑफ स्टडीस की वार्षिक बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. टी.वी. सत्यानन्दन,** अध्यक्ष, एफ आर ए डी ने सी एम एफ आर आइ क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, डिघा, पश्चिम बंगाल के लिए उचित स्थान चयन समिति के सदस्य के रूप में 6-8 सितंबर, 2016 के दौरान डिघा के केन्द्रीय और राज्य सरकार के कार्मिकों के साथ चर्चा की।

- **डॉ. पी.यु. ज़क्करिया,** अध्यक्ष, डी एफ डी ने सी आर आइ डी ए, हैदराबाद में 15-17 सितंबर, 2016 के दौरान आयोजित एन आइ सी आर ए परियोजना की वित्तीय समीक्षा बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. के.के. जोषी,** अध्यक्ष, एम बी डी ने 'तटीय जैवविविधता और पर्यावरण' विषय पर हिन्दी में रेडियो चर्चा में भाग लिया, जो 27 जुलाई, 2016 को आकाशवाणी विज्ञान भारती, नई दिल्ली द्वारा प्रसारित की गयी।

- **डॉ. प्रतिभा रोहित,** प्रभारी वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र ने 7 जुलाई, 2016 को कर्नाटक जैवविविधता बोर्ड की तकनीकी समिति की बैठक में भाग लिया।

  मात्स्यिकी एवं युवा मामलों के माननीय राज्य मंत्री और समुद्री मात्स्यिकी से जुड़े हुए विभागों के साथ 12 सितंबर, 2016 को विकास भवन, बंगलूरु में आयोजित बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. वीरेन्द्र वीर सिंह,** प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र ने महाराष्ट्र के वाधवान में प्रस्तावित पत्तन के स्थान की परामर्श परियोजना के संबंध में जे एन पी टी कार्मिकों के साथ 14 सितंबर, 2016 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. पी. लक्ष्मीलता,** प्रभारी वैज्ञानिक, मद्रास अनुसंधान केन्द्र ने "तमिलनाडु के पूर्वी तट के स्थानीय लोगों के परिरक्षण और आजीविका बढ़ाने के साथ साथ कम ग्रेड की प्रवाल झाड़ी आवास व्यवस्था की पुनःस्थापना और टिकाऊ आजीविका विकल्प" विषयक परियोजना के प्रारंभ पर चेन्नई में 4 जुलाई, 2016 को आयोजित बैठक में भाग लिया।

  विश्व बैंक समर्थित तटीय परियोजना 'आपदा जोखिम कम करने का कार्यक्रम टिकाऊ आजीविका के लिए मात्स्यिकी प्रबंधन' II (सी डी आर आर पी-एफ आइ एम एस यु एल II) के संबंध में 8 जुलाई, 2016 को मात्स्यिकी आयुक्त द्वारा आयोजित बैठक में भाग लिया।

  मात्स्यिकी आयुक्त का कार्यालय, चेन्नई में 29 जुलाई, 2016 को आयोजित हितधारकों की परामर्श बैठक में भाग लिया।

  मात्स्यिकी आयुक्त का कार्यालय, मात्स्यिकी विभाग तमिलनाडु द्वारा 8 सितंबर, 2016 को चेन्नई में आयोजित टेंडर परिवीक्षा एवं मूल्यांकन समिति की बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. एम.के. अनिल,** प्रभारी वैज्ञानिक, विषिंजम अनुसंधान केन्द्र ने राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड (एन एफ डी बी), हैदराबाद द्वारा 4-6 अगस्त, 2016 और 23-28 अगस्त, 2016 के दौरान आयोजित बैठकों में भाग लिया।

- **डॉ. गीता शशिकुमार,** प्रधान वैज्ञानिक ने नई दिल्ली में 12 जुलाई, 2016 को आयोजित खाद्य सुरक्षा के लिए वैज्ञानिक सहकारिता ढांचा कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. पी. कलाधरन,** प्रधान वैज्ञानिक ने वी आइ टी विश्वविद्यालय, वेल्लूर में 10-12 अगस्त, 2016 के दौरान आयोजित आइ सी ए ए बी-2016 (शैवाल जैवप्रौद्योगिकी में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन) में भाग लिया।

  गोवा में 22-24 सितंबर, 2016 के दौरान आयोजित क्लीन सी इंडिया सम्मेलन में आमंत्रित वक्ता के रूप में भाग लिया।

- **डॉ. रीता जयशंकर,** प्रधान वैज्ञानिक ने भारत के ऊपरी पूर्वी तट की समुद्री मात्स्यिकी संपदा विषय पर 5 अगस्त, 2016 को भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण द्वारा आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया।

- **डॉ. शेल्टन पादुवा,** वैज्ञानिक ने जिलाधीश कार्यालय के सम्मेलन कक्ष, काक्कनाड में कृषि विभाग के सहायक निदेशकों और कृषि अधिकारियों के लिए "जियोस्पाटियल प्रौद्योगिकियों के उपयोग से चावल और आर्द्र भूमि की पहचान और मानचित्रण" विषय पर दिनांक 16 जुलाई, 2016 को एक सत्र आयोजित किया।

- **डॉ. ग्रिनसन जोर्ज,** वैज्ञानिक ने नई दिल्ली में 19 अगस्त, 2016 को आयोजित एन सी ज़ेड एम ए की 32 वीं बैठक में भाग लिया।

- **डॉ. जो के. किषकूडन,** प्रधान वैज्ञानिक ने गाँवों के युवा मछुआरों के बीच पिंजरा मछली पालन प्रचलित करने के उद्देश्य से 06.08.2016 को चेमन्चेरी और एलन्तोप में, 31 अगस्त, 2016 और 15 सितंबर, 2016 को कोवलम में हितधाक/मछुआरा बैठकें आयोजित कीं। इसी तरह टी एस पी कार्यक्रम के अंतर्गत इरुला समुदाय के सदस्यों के बीच पिंजरा मछली पालन गतिविधियों का प्रचार करने के लिए सेंजिम्माननगर (पुलिकाट) में 2 सितंबर, 2016 को वैरवनकुप्पम (पुलिकाट) में 3 सितंबर, 2016 को हितधाक / मछुआरा बैठकें आयोजित कीं।

- **डॉ. एस.आर. कृपेश शर्मा,** प्रधान वैज्ञानिक और **श्री एन.जी. वैद्या,** तकनीकी अधिकारी ने 30 जून, 2016 को आयोजित कारवार न रा का स की 42 वीं अर्ध वार्षिक बैठक में भाग लिया।

कार्यशाला/ प्रशिक्षण/ सम्मेलन आदि	तारीख एवं स्थान	भागीदार
शैवाल जैव भार, जैव ईंधन और जैविक उत्पाद पर 6 वीं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	26-29 जून, 2016 सॉन डियागो, सं.रा.अ.	डॉ. रीता जयशंकर, प्रधान वैज्ञानिक
अंतर्राष्ट्रीय मात्स्यिकी अर्थशास्त्र एवं व्यापार संस्थान - आइ आइ एफ ई टी 2016 का 18 वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	11-15 जुलाई, 2016 अबेर्दीन प्रदर्शन एवं सम्मेलन केन्द्र (ए ई सी सी) स्कॉटलैंड, यु के	डॉ. श्याम एस. सलिम, प्रधान वैज्ञानिक
11 वां एशियन फिशरीस एवं अक्वाकल्चर फोरम	2-7 अगस्त, 2016 बैंकोक, थाईलैंड	डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, डॉ. आर. नारायण कुमार, डॉ. इमेल्डा जोसफ, डॉ. रेखा जे. नायर, डॉ. सोमी कुरियाकोस (प्रधान वैज्ञानिक गण), डॉ. ग्रिनसन जोर्ज, डॉ. एन. अश्वती (वरिष्ठ वैज्ञानिक गण)
यूरोपियन स्पेस एजेन्सी द्वारा पृथ्वी अवलोकन से महासागर के रंग और प्रकाश (सी एल ई ओ) विषय पर प्रायोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला	6-8 सितंबर, 2016 ई एस आर आइ एन-एफ आर ए एस सी ए टी आइ-इटली	डॉ. ग्रिनसन जोर्ज, वरिष्ठ वैज्ञानिक
डी बी टी द्वारा प्रायोजित मात्स्यिकी पेशेवरों के लिए आण्विक जीवविज्ञान और जैवप्रौद्योगिकी में राष्ट्रीय प्रशिक्षण	2 मई, 2016-30 अगस्त, 2016 भा कृ अनु प-सी आइ एफ ई, मुम्बई	सुश्री सलोनी शिवम, वैज्ञानिक
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और जी आइ ज़ेड-सी एम पी ए द्वारा भारत में समुद्री घास आवास तंत्र के प्रबंधन एवं परिरक्षण विषय पर सम्मेलन	12-13 जुलाई, 2016 नई दिल्ली	डॉ. आर. जयभास्करन, वरिष्ठ वैज्ञानिक
सरकारी खरीद	25-30 जुलाई, 2016 एन आइ एफ एम, फरीदाबाद 11-16 जुलाई, 2016 एन आइ एफ एम, फरीदाबाद	श्रीमती पोन्नम्मा राधाकृष्णन, स प्र अ श्री ए. पद्मनाभा, तकनीकी अधिकारी श्री आशिश चौबे, स प्र अ
प्रशासनिक सतर्कता-। (कोड ए वी 1-02) जांच/पेश अधिकारी की भूमिका	8-12 अगस्त, 2016 आइ एस टी एम, नई दिल्ली	श्रीमती मीरा के.एन., स प्र अ
परीक्षणात्मक आंकडा विश्लेषण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	24 अगस्त-6 सितंबर, 2016 आइ ए एस आर आइ, पूसा, नई दिल्ली	श्री एन. अनबरशु, वरिष्ठ तकनीकी सहायक श्रीमती आइ. संतोषी, वरिष्ठ तकनीशियन
कंप्यूटर प्रयोग	18-23 जुलाई, 2016 आइ ए एस आर आइ, नई दिल्ली	श्री जयकुमार सी.वी., तकनीकी सहायक
केरल ग्राम स्वराज फाउन्डेशन द्वारा पेरियार और पेय जल विषय पर आयोजित संगोष्ठी	8 सितंबर, 2016 एरणाकुलम	डॉ. वी. कृपा, डॉ. पी. कलाधरन, डॉ. डी. प्रेमा (प्रधान वैज्ञानिक गण) और डॉ. शेल्टन पादुवा (वैज्ञानिक)
मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए आवश्यक आवास तंत्र पहल, मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए आवास तंत्र पहल में विकास क्षमता और नया प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम	30 अगस्त-6 सितंबर, 2016 भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	डॉ. एस. लक्ष्मी पिल्लै, डॉ. यु. गंगा, डॉ. शोभा जो किषकूडन, डॉ. गीता शशिकुमार (प्रधान वैज्ञानिक गण) डॉ. शुभदीप घोष, डॉ.वी. वेंकटेशन (वरिष्ठ वैज्ञानिक गण) श्रीमती मुक्ता एम., श्री सुबल कुमार राउल, विवेकानन्द भारती, श्रीमती रम्या एल., डॉ.एल. रंजित, श्री रतीश कुमार, श्रीमती अनुलक्ष्मी चेल्लप्पन, डॉ.अखिलेश के.वी., श्री के. मोहम्मद कोया, श्री विनय कुमार वास, (वैज्ञानिक गण), श्रीमती एस. गोमती, (वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी), श्री रतीश टी.बी., श्री सजिकुमार के.के., श्री रागेश एन. (तकनीकी सहायक गण)
भारतीय वैश्विक मामला परिषद, नई दिल्ली द्वारा भारत और महासागर अर्थशास्त्र विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी	11-12 जुलाई, 2016 नई दिल्ली	डॉ. पी. एस. स्वातिलक्ष्मी, प्रधान वैज्ञानिक
आइ एफ पी आर आइ-एन ए ए आर एम द्वारा भारत में कृषि अनुसंधान क्षमता, निवेश एवं उत्पादन में हाल की प्रवणताएं विषय पर आयोजित संगोष्ठी	17 अगस्त, 2016 नई दिल्ली	डॉ. आर. नारायणकुमार, प्रधान वैज्ञानिक
केरल की मात्स्यिकी में एम एल एस के प्रभावकारी कार्यान्वयन पर एन ई टी एफ आइ एस एच द्वारा आयोजित एक दिवसीय बुद्धिशीलता कार्यशाला	26 अगस्त, 2016 भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	डॉ. आर. नारायणकुमार, डॉ. जी. महेश्वरुडु, डॉ. सी. रामचन्द्रन, डॉ. जोसलीन जोस, डॉ. एस. लक्ष्मी पिल्लै, डॉ. वी.पी. विपिन कुमार (प्रधान वैज्ञानिक गण) और डॉ. पी. षिनोज (वैज्ञानिक)

नियुक्तियाँ

	नाम	पदनाम	केन्द्र	प्रभावी तारीख
1.	श्री नवीन कुमार यादव	सहायक निदेशक (राजभाषा)	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	09.09.2016

पदोन्नतियाँ

	नाम व पदनाम	पदोन्नत पद	केन्द्र	प्रभावी तारीख
1.	श्रीमती सी. देवकी, उच्च श्रेणी लिपिक	सहायक	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.07.2016
2.	श्रीमती पी. विनीता, वैयक्तिक सहायक	निजी सचिव	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	01.08.2016

स्थानांतरण

	नाम व पदनाम	से	तक	प्रभावी तारीख
1.	श्री किशोर रघुनाथन मैनकर, तकनीकी अधिकारी	अलिबाग क्षेत्र केन्द्र	रत्नगिरी क्षेत्र केन्द्र	07.07.2016
2.	श्री एम.पी. जाधव, वरिष्ठ तकनीशियन	रत्नगिरी क्षेत्र केन्द्र	अलिबाग क्षेत्र केन्द्र	05.07.2016
3.	श्री ए. शांत कुमार, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	20.07.2016
4.	श्री पल्ली कालिदासु, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	22.07.2016
5.	श्री बिसुन भास्कर, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	मांगलूर अनुसंधान केन्द्र	20.07.2016
6.	सुश्री इंदिरा दिविपाला, वैज्ञानिक	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र	27.07.2016
7.	श्रीमती एस. शारदा, सहायक	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	01.08.2016
8.	डॉ. एस.आर. कृपेश शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक	कारवार अनुसंधान केन्द्र	भा कृ अनु प- सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	15.09.2016

पदत्याग

	नाम व पदनाम	से	प्रभावी तारीख
1.	श्री अलेक्स टी.हिसकिएल, स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	14.07.2016
2.	श्री सादिक एम.एम., स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ	भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची	11.08.2016

अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्ति

श्री सी.एन. चन्द्रशेखरन
निजी सचिव
31.07.2016
भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ, कोच्ची

श्री सुरेश रुमो मजालिकर
स्किल्ड सपोर्ट स्टाफ
31.07.2016
कारवार अनुसंधान केन्द्र

श्री एस. गणेशन
तकनीकी अधिकारी
31.08.2016
मद्रास अनुसंधान केन्द्र

श्री बिजोय कृष्ण बर्मन
वरिष्ठ तकनीकी सहायक
31.08.2016
कोन्टै क्षेत्र केन्द्र

स्क्विडों के लिए प्रकाश मत्स्यन

कृपया पृष्ठ 8 देखें

सी एम एफ आर आइ
CMFRI

कडलमीन

सी एम एफ आर आइ समाचार

कडलमीन, सी एम एफ आर आइ समाचार केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्ची का तिमाही प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारियों को मछुआरा समुदाय तक विकीर्णन करता है।